city भास्कर
INDORE FRIDAY, 28/09/2018

कब तक भारत यंग नेशन रहेगा? जब यहां बुज़ुर्ग ज्यादा होंगे तब हम आने वाली पीढ़ी पर निर्भर होंगे

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

भारतीय रक्षा वैज्ञानिक और डीआरडीओ के पूर्व महानिदेशक पद्म विभूषण डॉ. वासुदेव अत्रे का मानना है कि विश्व शक्ति बनने से पहले देश का आर्थिक रूप से मजबूत होना जरूरी है। आज हर देश विश्व शक्ति बनना चाहता है, इसमें भारत भी शामिल है। इसलिए साइंस एंड टेक्नोलॉजी की जरूरत है। लेकिन उससे पहले नॉलेज होना जरूरी है और नॉलेज के लिए साइंस और टेक्नोलॉजी का होना बहुत जरूरी है। दुनिया के सभी विकसित देश साइंस-टेक्नोलॉजी की मदद से ही मजबूत हुए हैं। इसलिए हमें इंडियन यंग माइंड को प्रमोट करना होगा।

आर्यभट्ट मेमोरियल ओरेशन के तीसरे आयोजन में गुरुवार को डॉ. वासुदेव अत्रे शामिल हुए। श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में हुए इस कार्यक्रम में उन्होंने साइंस एंड टेक्नोलॉजी इन इंडियन सिनेरियो विषय पर बात की। भारत में विज्ञान और तकनीक के विकास के साथ ही उन्होंने कुछ कमियों को भी उजागर किया। कहा - सिलिकॉन वैली में जितनी भी बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियां हैं वहां 50 प्रतिशत से ज्यादा भारतीय काम कर रहे हैं। जब भी साइंस और तकनीक की बात आती है तब भारत का नाम जरूर आता है। पूरी दुनिया में भारतीय मूल्यों का हमेशा से सम्मान रहा है। हम 3 बिलियन खर्च कर रहे हैं चंद्रयान पर। हम मल्टीपल सैटेलाइट सिस्टम तैयार कर रहे हैं, जीपीएस तैयार कर रहे हैं। सुरक्षा की दृष्टि से कोई समस्या नहीं है हमारे यहां। इसलिए जब भी हम उपकरण बनाते हैं वो सबसे ज्यादा फाइनेस्ट होते हैं। भले ही वो सोलर हो न्यूक्लियर हो एयरक्राफ्ट हो। 70 साल में इतने सारे अचीवमेंट हासिल करने के बावजूद कई कमियां हैं।

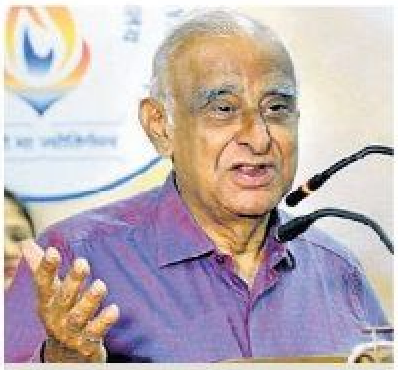

देश में साइंस एंड टेक्नोलॉजी मंत्री उसे बनाया जाता है, जिसे उसके बारे में कोई जानकारी नहीं। कर्नाटक में जब एजुकेशन मिनिस्टर की शिक्षा नीतियों पर सवाल हुए तो मामला सीएम तक पहुंचा। सीएम ने कहा मैं खुद अशिक्षित हूं, लेकिन सीएम तो हूं। ये हमारे नेताओं का एटिट्यूड है।

कमी ये कि हम एडॉप्टर हैं, हम क्रिएटर नहीं है। हम औरों की चीजें अपना तो रहे हैं, लेकिन नवसृजन नहीं कर रहे। हम सिर्फ टेक्नीक को रिसीव कर रहे हैं। आईआईटी मुंबई को पीछे छोड़ इंदौर आईआईटी ने देश के सर्वोच्चा संस्थानों में सेकंड पोजीशन हासिल कर ली है। हमारे यहां आईआईटी है, रिसर्च पेपर भी तैयार कर रहे हैं, लेकिन प्रयोग नहीं हो रहे। डिज़ाइन सिर्फ कागज़ पर हो रहे हैं। अमेरिकन यूनिवर्सिटीज में एडवांस रिसर्च कर रहे हैं। हमें हर दिन दुनिया की दूसरी यूनिवर्सिटीज़ की नई रिसर्च पढ़ने को मिलती है। लेकिन भारत की नहीं पढ़ने मिलती। यदि हम कोई भी इलेक्ट्रानिक गैजेट्स पर निर्भर है हमारा अपना कोई सामान नहीं है।

गांव में भी रिसर्च हो रही है। पिछले कुछ सालों में देखा है। गांव की रिसर्च सामने आ रही है। अभी हम यंग है, इसलिए अभी अच्छा काम करना होगा, बाद में हमारे पास समय नहीं होगा। हम सिर्फ तकनीक की सोच रहे हैं, लेकिन आम आदमी के जीवन पर असर करनेवाला इन्फ्रास्ट्रक्चर भी जरूरी है।

आने वाले 20 साल बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम बूढ़े हो जाएंगे। यंग नेशन नहीं रहेगा भारत। सब कुछ आने वाली पीढ़ी पर निर्भर होगा। यूनिवर्सिटी को रिसर्च के लिए 200-300 करोड़ रिसर्च में लगाना चाहिए। शिक्षा का बजट बहुत कम है। शिक्षा पर काम करें, रिसर्च में बजट बढ़ाएं। हमारे पास अभी भी कोई अच्छा विजन नहीं है।

पत्रिका PLUS

इंदौर, शनिवार, 29.09.2018

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में फोरेंसिक साइंस पर नेशनल सेमिनार

फोरेंसिक स्टडीज को बढ़ावा देने के लिए प्रोफेशनलिज्म जरूरी

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में शुक्रवार को फोरेंसिक साइंस पर नेशनल सेमिनार 'संवाच्य' का आयोजन किया गया।

इसमें आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, जम्मू-कश्मीर सरकारों के फोरेंसिक सर्विस एडवाइजर डॉ. गांधी पीसी काझा ने कहा, फोरेंसिक स्टडीज में रिसर्च बेस्ड कल्चर और वैज्ञानिक प्रक्रिया के लिए सम्मान और इमानदारी को बढ़ावा देने के लिए प्रोफेशनलिज्म लाना होगा।

उन्होंने कहा, फोरेंसिक सेवाओं की गुणवत्ता में विश्वास बढ़ाने के लिए, प्रत्येक फोरेंसिक विज्ञान और फोरेंसिक दवा सेवा प्रदाताओं को कुछ बातें ध्यान में रखनी होती हैं। इसमें नई प्रौद्योगिकियों के सत्यापन और निगमन को बढ़ावा देना, अपनी शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुभव और विशेषज्ञता के हिसाब से काम करना, पूर्ण निष्पक्ष जांच कर रिपोर्ट देना आदि शामिल हैं। संयुक्त निदेशक सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद और सेवानिवृत्त निदेशक, एपी फोरेंसिक साइंस लैब, हैदराबाद शारदा अवधनम ने कहा, हर क्राइम सीन यूनीक होता है। अपनी-अपनी चुनौतियां होती हैं।

एस्फेक्सिया की दी जानकारी : डॉ. अशोक कुमार गुप्ता, निदेशक मेडिको लीगल इंस्टिट्यूट भोपाल ने एस्फेक्सिया के बारे में बताया। उन्होंने कहा, वह ऐसी स्थिति है, जहां शरीर को सामान्य कार्य जारी रखने के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलती है या बहुत अधिक कार्बन डाइऑक्साइड होती है। पर्याप्त ऑक्सीजन के बिना, मस्तिष्क में तंत्रिका कोशिकाएं लगभग 2-4 मिनट में मरने लगती हैं और यह अपरिवर्तनीय है।

सेमिनार में वैष्णव विद्यापीठ यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. उपिंदर धर, चांसलर पुरुषोत्तम दास पसारी, कन्वेयर डॉ. कविता शर्मा मौजूद थे।